क्लोन सुअरों का दुखद अंत

एक नई प्रक्रिया से पैदा हुए तीन क्लोन सुअरों को एक साथ अचानक दिल का दौरा पड़ा और तीनों मौत की नींद सो गए। यह तो पहले से पता है कि क्लोन जन्तु तमाम किस्म की समस्याओं से ग्रस्त रहते हैं और समय से पूर्व चल बसते हैं। मगर सामान्यतः ये समस्याएं अलग-अलग होती हैं और इनका पूर्वानुमान नहीं किया जा सकता। मगर ये तीनों क्लोन एक-सी समस्या के शिकार हुए हैं, जो अचरज का विषय है।

आम तौर पर क्लोन निर्मित करने का तरीका यह है कि मादा जन्तु का एक अण्डा लिया जाता है और उसमें से केंद्रक हटा दिया जाता है - गौरतलब है कि केंद्रक में सारी जिनेटिक सामग्री होती है। अब एक सामान्य कोशिका ली जाती है और उसका केंद्रक निकालकर उपरोक्त केंद्रक विहीन अण्डे में डाल दिया जाता है। अण्डे का कोशिका द्रव्य इस नए केंद्रक पर कुछ ऐसा असर डालता है कि वह फिर से भ्रूणावस्था के केंद्रक की तरह व्यवहार करने लगता है और एक पूरा नया जीव बना देता है। मगर कनेक्टिकट विश्वविद्यालय के ज़ियांगजोंग यांग ने एक नई प्रक्रिया अपनाई।

यांग के दल ने अण्डे का केंद्रक तो हटाया मगर उसमें किसी सामान्य कोशिका का मात्र केंद्रक रखने की बजाय पूरी कोशिका ही रख दी। इस प्रयोग में चार सुअर बच्चे पैदा हुए। यांग ने इसे एक उपलब्धि बताया क्योंकि यह ज़्यादा आसान है।

चार क्लोन सुअरों में से एक तो जल्दी ही इन्फेक्शन से मारा गया। यह क्लोन जन्तुओं में सामान्य बात है। शेष तीन क्लोन सुअर काफी स्वस्थ थे। जब अचानक तीनों एक-सी समस्या (दिल के दौरे) से ग्रस्त होकर मरे तो यह आश्चर्य की बात थी।

जिस सुअर की कोशिकाओं से ये क्लोन बने थे वह ज़िन्दा है और उसमें किसी हृदय रोग का कोई लक्षण नहीं है। यानी इन क्लोन्स को यह रोग विरासत में नहीं मिला है। चारों क्लोन का विकास अलग-अलग सुअरियों के गर्भाशय में हुआ था, इसलिए यह रोग इन्हें वहां से भी नहीं मिला होगा। मतलब सारा दोष क्लोनिंग की तकनीक का ही है।

मगर यांग का दल एक बात पर खुशी ज़ाहिर कर रहा है। आम क्लोनिंग में क्लोन को कौन-सी दिक्कत होगी, कहा नहीं जा सकता। इस नई तकनीक में सारे क्लोन एक ही समस्या से पीड़ित हुए। तो इसकी खोजबीन करके कारण पता लगाया जा सकता है और उसको दूर करने के प्रयास हो सकते हैं। उन्होंने इस दिशा में काम करना शुरू भी कर दिया है। ***(स्रोत विशेष फीचर्स)***